:वतास 5-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। रूहानी बच्चे यहां बैठे हैं, बुधि में यह ज्ञान है कैसे शुरू में हम ऊपर से आते हैं। जैसे दिखलाते हैं विष्णुअवतरण का खेल। विमान में बैठ कर फिर नीचे आते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो अवतार जो कुछ दिखलाते हैं वह सभी कितनी रांग है। भक्ति-मार्ग में जो शिक्षा मिलती है वह कितनी रांग है। अभी तुम समझते हो आत्मायें हम कहां के रहने वाले हैं, कैसे ऊपर से फिर आते हैं, यहां कैसे 84 जन्मों का पार्ट बजाते हैं पतित बने हैं। अभी फिर बाप पवित्र बनाते हैं। यह तो जरूर तुम सभी स्टुडन्ट के बुधि में होना चाहिए। 84 का चक्र क्रम कैसे लगाते हैं वह स्मृति में हरना चाहिए। बाप ही समझाते हैं तुम कैसे 84 जन्म लेते हो। कल्प की आयु को लम्बा-चौड़ा टाईम देने कारण इतनी सहज बात भी मनुष्य समझते नहीं हैं। इसलिए भारतवासियों को ब्लाईन्ड-फेथ कहा जाता है। जो भी और सभी धर्म हैं वह कैसे स्थापन होते हैं यह भी तुम्हारी बुधि में हैं। तुम जानते हो पुनर्जन्म लेते2 पार्ट बजाते2 ताकि अभी अन्त में आकर पहुंचे हैं। अभी फिर वापस जाते हैं। यह नालेज तो तुम बच्चों को ही हैं। दुनिया में और कोई यह नालेज नहीं जानते। कहते भी हैं 5000 वर्ष पहले पैराडाईज़ था। परन्तु वह क्या थायह नहीं जानते। जरूर आदी सनातन देवी देवताओं का ही राज्य था। परन्तु यह बिलकुल ही जानते ही नहीं। जैसे धुन्धकारी होते हैं ना। तुम समझते हो हम भी पहले कितने अन्दर में थे। कुछ नहीं जानते थे। और धर्म वाले भी ऐसे थोड़े ही हैं अपने धर्म स्थापक को नहीं जानते हैं। हैं इनकी गपोड़े लगा दिये हैं। क्योंकि पत्थर बुधि अनजान है। तुम अभी ज्ञानू नालेज-फुल हो। बाकी सारी दुनिया बाप ने अनजान हैं। हम कितने समझदार बने थे अभी बेसमझ अनजान हो गये हैं। मनुष्य होकर अथवा आ जायेंगे। कर हम कुछ नहीं जानते थे। अभी बाबा ने आकर हमको कितनी नालेज दी है। नालेज का प्रभाव में ताकत रहेगी। यह तुम ही जानते हो। तुम बच्चों को अन्दर में कितना गद गद होना चाहिए। जब धारणा हो करते थे तो गदगद पना आये। तुम जानते हो हम शुरू2 में कैसे आये फिर कैसे शुद्र कुल से ब्राहमण कुल में ट्रान्सफर और ही रा। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो तो तुम्हारे सिवाय दुनिया मेंऔर कोई भी नहीं जानते। तो अन्दर वान सज्ञान डांस होना चाहिए। बाबा हमको कितना वन्डरफुल नालेज देते हैं। जिस नालेज से हम अपना का प्रभावाते हैं। लिखा हुआ भी है इस राज्योग से मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। परन्तु कुछ भी समझ वह जड़ आता था। अभी बुधि में सारा राज आ गया है। हम शुद्र से अभी सो ब्राहमण बने हैं। यह मंत्र भी झाड़ कोकोई। हम सो शुद्र थे। अभी सो ब्राहमण बने हैं फिर हम सो देवता बनेंगे। फिर हम नीचे आये हैं। भी बड़ी प्रजन्म लेते, चक्र लगाते है। यह नालेज बुधि में होने कारण खुशी भी रहनी चाहिए। औरों को भी यह चलते2 ऐसी से मिले कितनी खयालात चलती है। कैसे सभी को बाप का परिचय देवें। तुम ब्राहमण कितना उपकार तोकी हुई हो। बाप भी उपकार करते हैं। बिलकुल ही अन्जान दुःखी हैं उन्हों को सदा सुखी बनावें। आंखेखोलें से भी लिखती है ना। जिनको सिव सर्विस का शौक रहता है उन्हों को अन्दर में आना चाहिए बहुत खुशी होनी को भी भेज हम आत्मायें कहां के रहने वाली हैं। फिर कैसे आते हैं पार्ट बजाने। कितने ऊंच बनते हैं। फिर कैसे पत्र दिखलाते हैं फिर रावण राज्य शुरू कब होता है यह भी अभी बुधि में आया है। आगे तो जैसे बिलकुल भूल है। बाप कित मार्ग और ज्ञान मार्ग मेंरात दिन का फर्क है। भक्ति से नीचे ही उतरते आये हैं। अभी ज्ञान मिला है कोई भूल धोक्ति किसने की है। तुम कहेंगे पहले 2 हम ऊंच तो बहुत ही सुखदेखा फिर हम भक्त बने रावण ते हो। फिर और पुजारी में कितना रातदिन का फर्क है। भक्त लोग कितना खुश होते हैं। तुम समझते हो भक्ति नो निर उतरना ही है। भल कितने भी भक्ति करते करते शिव पर वा किस पर कुर्बान हो जाये परन्तु नीचे उतरना ही है। एक कदम भी ऊपर नहीं जा सकते। तुम्हारे पास अभी कितना ज्ञान है। खुशी होना कैसे हम ने 84 का चक्र लगाया है। कहां 84 जन्म कहां 84 लाख जन्म कह दिया है। इतनी छोटी

सी बात भी किसके ध्यान में नहीं आता। लाखों वर्ष की भेंट में यह तो जैसे एक दो रोज के बराबर हो जाता है।

अच्छे2 बच्चों की बुद्धि में यह चक्र फिरता रहता है। तब ही कहा जाता है स्वदर्शनचक्रधारी बच्चों। कृष्ण स्वदर्शन-चक्रधारी नहीं था। सतयुग में यह नालेज होती नहीं। स्वर्ग का कितना गायन है। वहां सिर्फ भारत ही था। जो था वह फिर बनना ही है। बाहर से तो देखने में कुछ नहीं आता है। हां सा० होता है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया अभी खत्म होती है फिर नम्बरवार हम नई दुनिया में आवेंगे। कैसे आत्मायें आती हैं पार्ट बजाने वह भी तो तुम समझ गये। आत्मायें कोई ऊपर से उतरती नहीं हैं। जैसे नाटक में दिखाते हैं ना। आत्मा को तो इन आंखों से कोई देख भी न सके। आत्मा कैसे आती है, छोटे शरीर में कैसे प्रवेश करती है, बड़ा ही वन्डरफुल खेल है। यह ईश्वरीय पढ़ाई है ना। इसमें दिन-रात खयालात चलनी चाहिए। हम एक बार समझ लेते हैं जैसे कि देख लेते हैं फिर वर्णन करते हैं। आगे जादू वाले लोग बहुत चीजें निकाल दिखाते थे। बापको भी जादूगर, सौदागर रत्नागर कहते हैं ना। आत्मा में ही सारा ज्ञान ठहरता है। आत्मा ही ज्ञान सागर है। भल कहते भी हैं परमात्मा ज्ञान का सागर है परन्तु वह कौन कैसे वह जादूगर रत्नागर है यह किसको भी पता नहीं। कृष्ण तो हो न सके। वह तो देह धारी मनुष्य है। उनको ज्ञान किसने दिया। तुम श्रीकृष्ण के 8 जन्म बताते हो। तो भी मनुष्य बिगड़ते हैं। आगे तुम भी नहीं समझते थे। ईडियट्स थे। अभी बाप आत्मा बनाते हैं। अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। एक बाप ही नालेजफुल है। हमको पढ़ाते भी हैं। यह सिर्फ बच्चे ही जानते हो। यह दिन रात अन्दर में सिमरण चलना चाहिए। यह बेहद के नाटक का नालेज सिर्फ बाप के और कोई सुना भी न सके। बाबा ने कुछ देखा थोड़े ही है परन्तु उन में सारी नालेज है। बाबा कहते हैं मैं सतयुग त्रेता में तो नहीं आता हूं। परन्तु नालेज सारी सुनाता हूं। वन्डर लगता है, ना। जिन्होंने ही नहीं लिया वह कैसे बतलाते हैं। बाप कहते हैं मैं ने कुछ भी देखा नहीं है, न मैं सतयुग-त्रेता में हूं। परन्तु मेरे में नालेज कितनी अच्छी है। जो मैं एक ही बारी आकर तुमको सुनाता हूं। बस। फिर भक्ति-मार्ग में पार्ट चलता है। तुम ने पार्ट बजाया तुम जानते ही नहीं हो। और जिसने पार्ट ही नहीं बजाया वह सुनाते हैं। वन्डर है ना। हम जो पार्ट धारी हैं हम कुछ नहीं जानते और बाप में कितनी सारी नालेज है। कहते हैं मैं थोड़े ही सतयुग-त्रेता में आता हूं जो तुमको अनुभव सुनाऊं। ड्रामा अनुसार बिगड़ देखे अन्दर नालेज देते हैं कितना वन्डर है। मैं पार्ट बजाने आता ही नहीं और तुमको सारा पार्ट समझाता हूं। इसी ही मुझे नालेजफुल कहते हैं। तो बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों अभी अपनी उन्नति करनी है। अपने को आत्मा समझो। यह बेहद खेल। तुम फिर भी ऐसे ही खेल करेंगे। देवी-देवता बनेंगे फिर चक्र लगा कर अन्त में शूद्र बनेंगे। वन्डर खाना चाहिए ना। बाबा में यह नालेज कहां से आया। उनका तो कोई गुरु भी नहीं। उन को ड्रामा के प्लेन अनुसार ज्ञान आई। पहले से ही उन में पार्ट बजाने की नूंध है। इनको कुदरत कहेंगे। यह बात वन्डरफुल है। तो बाप बैठ नई2 बातें सुनाते हैं। ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए। 84 जन्म भी याद करना है। 84 जन्मों का राज़ बाप ने ही समझाया है। विराट रूप का चित्र कितना अच्छा है। बाबा विष्णु अथवा ल०ना० का चित्र बनाते हैं वही दिखलाते हैं हम कैसे 84 जन्मों में आते हैं। फिर क्षत्री वैश्य फिर शूद्र... यह सिमरण करने में कोई क्या तकलीफ है। बाप है नालेजफुल। थोड़े ही है। न शास्त्र आदि ही पढ़ा है। बिगड़ कुछ भी पढ़े बिगड़ गुरु किये इतनी सारी नालेज बैठ जाती है। ऐसा तो कब देखा नहीं। बाप कितना मीठा है। भक्ति-मार्ग में कोई किसको कोई किसको मीठा समझ लेते हैं। जो आता है उसकी पूजा करने लग पड़ते हैं। बाबा बैठ सभी राज़ समझाते हैं। आत्मा ही आनन्द में फिर आत्मा ही दुख में छी छी बन जाती है। भक्ति मार्ग में तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे। मेरी कितनी अच्छी

महिमा करते हैं। परन्तु जानते कुछ भी नहीं। कितना वन्डरफुल है। यह सारा खेल बाप ने ही समझाया है। इतने चित्र सीढ़ी आद के कब देखे नहीं थे। अभी देखते हैं सुनते हैं तो कहते भी हैयह ज्ञान तो यर्थात रीति है काम महाशत्रु है यह सुन कर डिडर ही ढिली हो जाती है। कितनी माईयां भी कहां2 फंसी हुई है। नाम भी है ना पुतनाएं अकासुर, बकासुर, कंस जरासंधी। पुराई कन्याओं को, स्त्रियों को भागाने वाले प्रेक्टीकल में हैं। तुम कितना समझाते हो, समझते ही नहीं हैं। कितनी मेहनत लगती है। यह भी जानते हो कल्प पहले जिन्हों ने समझा था वही समझेंगे। देवी परिवार के जितने बनने वाले होंगेउन्हों को ही धारणा होगी। तुम जानते हो हम श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन करते हैं। बाप बाप की डेसेशन है औरों को भी आप समान बनाओ। बाबा भी ज्ञान का सुना रहे हैं। तुम भी सुना सकते हो। तो जरूर यह शिव बाबा का रथ भी सुना सकता होगा परन्तु अपनको गुप्त कर देते हैं। तुम शिव बाबा को ही याद करते रहो। इनकी उपमा भी नहीं करनी है। सर्व कस सदगति दाता, माया के जुंजीर से छुड़ाने वाला एक ही हैं। बाप कैसे बैठ तुमको समझाते हैं। तुम बच्चों के सिवाय और कोई को पता नहीं है कि रावण क्या चीज़ है। हर वर्ष जलाते ही आते हैं। एफजी तो दुश्मन का बनाया जाता है ना। यह और किसको पता नहीं हैं। तुमको भी पता पड़ा है। रावण का भारत का दुश्मन है। जिसने भारत को क्या बना दिया है। कितना दुःख किया है 5 विकारों रूपी रावण ने। बच्चों को अन्दर में यहआनाचाहिए कैसे औरों को भी रावण से छुड़ावें। सर्विस तो एकती है तोप्रबन्ध करना है। बाप कहते हैं इनकी हुण्डी में सकारता हूं। ड्रामा में नूंध है। सर्विस का अच्छा चांस है तो अस में पूछने का भी नहीं रहता। बाप ने कह दिया है सर्विस करते रहो। मांगो कोईसे भी नहीं। मांगने से मरना भला। आपे ही तुम्हारे पास आ जावेंगे। मांगने से सेन्टर उतना जोर नहीं पड़ेगा। बिगड़ मांगे तुम सेन्टर जमा देंगे आपे ही आते रहेंगे। उस में ताकत रहेगी। जैसे बाहर वाले चन्दा इकट्ठा करते हैं ऐसे तुमको नहीं करना है। गांधी रामराज्य स्थापन करते थे तो माईयों क्या2 जाकर देती थी। समझते थे यह कोई अवतार है। अन्धश्रधा थी ना। नतीजा क्या निकला और ही रावण हो पड़ा। सीढ़ी तो नीचे उतरना ही है। वह कब भगवान कहा नहीं जाता। जो अपने को भगवान समझते हैं वह हिरण्यकश्यप जैसे दैत्य है। शिवोहम कह, बैठ कर अपनीपूजा कराते हैं। भक्ति-मार्ग का प्रभाव बहुत है। ज्ञान तो है बीज। बीज रूप बाप बैठ तुमको ज्ञान देते हैं। बीज ही नालेज फुल है ना। वह जड़ बीज तो वर्णन कर न सकेंगे। तुम वर्णन करते हो। सभी बातों को समझ सकते हो। इस बेहद के झाड़ कोकोई भीसमझे नहीं। तुम अन्यन्य बच्चे जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप समझाते हैं माया भी बड़ी प्रबल है। कुछ सहन भी करना पड़ता है। कितने कड़े-कड़े विकार हैं। अच्छी2 सर्विस करने वालों को चलते2 ऐसी माया की चमाट लग जाती है, कहते हैंहम तो गिर गये। ढाका ऊपर चढ़ते2 नीचे गिर पड़े तो की हुई कमाई चट हो जाती है। डन्ड तो जरूर मिलना चाहिए ना। बाप से प्रतिज्ञा करते हैं बल्ड से से भी लिख कर देते हैं फिर भी गुम हो गये। बाबा पक्का करने लिए देखते भी हैं। उनका कापी उनके मां-बाप को भी भेज देते हैं। तुम्हारे बच्ची ने ऐसे2 लिख कर दिय है फिर कहां बुधि योग जावे तो उनको यह प्रतिज्ञा-पत्र दिखलाना। भगवान को लिख कर देते हैं। इतनी युक्तियां करते हुये भी फिर दुनिया तरफ बुधि चली जाती है। बाप कितना सहज समझाते हैं। पार्टधारी को अपने पार्ट का ही सिमरण करना चाहिए। अपना फार्ट को कोई भूल धोड़े ही सकते हैं। बाप तो रोज़ भिन्न-भिन्न प्रकार से समझाते रहते हैं। तुम भी बहुतों को समझाते हो। फिर भी कहते हैं हम बाबा के पास सम्मुख जावें। बाबा का तो वन्डर है ना। रोज मुरली चलाते हैं। वह तो निराकार, नाम-रूप, देश,-काल, तो है नहीं। फिर मुरली कैसे सुनावेंगे। वन्डर खाते हैं ना। फिर पक्के हो हैं। दिल होती है ऐसा बाप वर्सा देने आये हैं उन से तो मिलें। पहले2 तो तुमको लिखना चाहिए कितने बाप हैं? एक है लौकिक दुसरा है पारलौकिक। एक है शरीर का बाप, दुसरा है

उस बेहद के बाप को सभी याद करते हैं। हे दुःख-हर्ता, सुख कर्ता। बाबा आप आवेंगे तो आप से जरूर स्वर्ग का वर्सा लेंगे। ऐसे बाप को तो तुम जानते ही नहीं हो। न जानने के कारण ही निर्धनके बन गये हो। बात ऐसी करनी चाहिए जो एकदम पानी कर देना चाहिए। बेहद का बाप 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। तब तो तुम उनको याद करते हो। अभी बाप आये हैं, तुम बाप से वर्सा नहीं लेंगे। बाप को याद नहीं करेंगे।

बाप को याद करने से ही तुम सतोप्रधान विश्व का मालिक तुम बन जावेंगे। पहले2 ही एकदम पानी कर देना चाहिए। भल जोड़ा हो। जोड़ों को ही कान दुआ चाहिए। पवित्र रहेंगे तो बाप से वर्सा मिलेगा। पवित्र न रहेंगे तो बिलकुल खाली खाते में। मेरा बन कर और फिर बाहर में जाकर ग्लानी कराते हैं तो चण्डाल का जन्म पा लेंगे। वह ठौर पा न सके। ठौर न पाते हैं तो फिर नीचे गिर पड़ते हैं। बाप बलवान है तो माया भी कम नहीं। बड़ी जबरदस्त है। इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहना। कहावत भी देते हैं अंगर बिठो... रावणको चुहड़ा करेंगे ना। क्या से क्या बना देती है। वह तो भार उठाते हैं यह तो एकदम खाते हैं। गुरु नानक ने भी कहा है ना। गुरु अक्षर कहते हैं सिर्फ नानक अक्षर कोई सुन ले तो उनको गुस्सा आ जावेगा कि यह गुस्नानक भी नहीं कहते हैं। अन्दर में तो समझते हैं सदगति का गुरु एक ही बाप के सिवाय कोई है नहीं। वह तो सभी हैं शरीरधारी। यह बात तो अशरीरी है। तुम्हारा सतगुरु जो हैं उनको कितनी नालेज है। कुछ भी शास्त्र आदि नहीं पढ़ा है। अनपढ़ होते भी मेरे में कितनी नालेज है। यह भी ड्रामा में पार्ट है। तुम बच्चों की बुधि में ही है। जो भी धर्मस्थापक आते हैं कोई को भी गुरु नहीं कह सकते। गुरु वह जो ज्ञान देवे। वापस ले जावे। सिवाय बाप के और कोई तो वापस ले जा नहीं सकते। बाप ही जब देखते हैं सभी अति दुःखी हुये हैं तब ही आकर सभी को ले जाते हैं। लड़ाईयों में देखो कितने मनुष्य मरते हैं फिर बैराग्य भी आता है मेरे कारण इतने सभी को मौत हो रहा है। तुम बच्चे जानते हो इनका नाम ही है खूनी-नाटक खेल। तुम्हारी बुधि में सारा ज्ञान है। तुम यह ज्ञान प्राप्त कर यह पद पाते हो। अन्दर में गुप्तगुप्त होनी चाहिए। बाप है गुप्त। अभी हम जाते हैं सुखधाम। तो बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनेंगे। जो भ्रष्ट मत देते हैं उनका तो मुंह भी नहीं देखना चाहिए। उल्टी मत पर चल और गिरा।

कर्म-ईन्द्रियों को भी वस करना है। नहीं तो यह कर्म-ईन्द्रियां बहुत धोखा देंगी। जितना खावेंगे तो घड़ी2 दिल होगी चूड़ी का लड्डू और खाऊं मांगते रहेंगे। इसलिए पक्का हो याद में रह खाना चाहिए। ऐसे नहीं चीज देखी और खाली ली। भल कोई प्रवाह नहीं है। परन्तु कर्म ईन्द्रियों को बस करना है। यज्ञ का भोजन तो जरूर अच्छा ही मिलेगा। आलमाईटी बाबा ने भी सभी के अवस्थाओं की जांच करने लिए प्रोग्राम भेजा था। 5 दिन सभी को छाछ और डोडा खावे। बुखार वाले हो वा कोई भी हो सभी को खाना है। ड्रामा में पार्ट था। कहा देखो मेरे हुकुम पर चले, कोई बिमार पड़ा था। कुछ भी नहीं। तो कर्मईन्द्रियों को वस भी करना है ना। बाबा का यज्ञ है। भोजन तो अच्छा ही मिलता है। बाप पर निश्चय नहीं है बाप कहे यह करो। कभी नहीं करेंगे। बाबा समझ जाते हैं बुधू है। बाप की पहचान नहीं है।

बाबा इतना याद में नहीं रह सकता है जितना कि तुम बच्चे रह सकते हो। बैठे2 क्या2 हो जाता है, मना चली गई, अभी उनका पार्ट दूसरा कोई थोड़े ही बजा सकता है। ला नहीं कहता। बच्चा भी राईट हैंड था, बहुत अच्छा पुराना अनुभवी था वह भी चला गया। उन जैसा अनुभवी तो कोई मिल भी नहीं सकता। तो वह भी खयालात इनको करना पड़ता है। कितनी खुशलात रहती है।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। मीठे2 रूहानी बच्चों को बाप का नमस्ते।

::-ओमशान्ति::- *::-बाबा याद है?::-